आज की मुरली का सहज सार ---------- Date: 20-07-14

अपने ज्ञान से श्रृंगार कर हम बच्चों को इच्छा-मात्रम-अविधा बनाने वाले, बापदादा ने कहा, अल्पकाल के नाम और मान से न्यारे ही सर्व के प्यारे बन सकते हैं.

बापदादा हमें कैसा देखता हैं?

आज बापदादा विशेष बच्चों से मिलन मनाने आए हैं. जैसे बच्चे निरन्तर योगी हैं अर्थात बाप के स्नेह के सागर में सदा लवलीन हैं, ऐसे ही बाप भी बच्चों के स्नेह में निरन्तर बच्चों के गुण गाते हैं. हर बच्चे की गुण माला और हर बच्चे के श्रेष्ठ चरित्र के चित्र बापदादा के पास हैं. हरेक का चित्र और माला बाप सदा देखते रहते हैं.

हम बच्चे क्या करते हैं?

बापदादा कहते हैं, तुम सबको तो एक बाप को याद करना पड़ता - बापदादा को सर्व बच्चों को याद करना पड़ता - एक को भी भूल नहीं सकते. अगर भूलें तो बच्चों के उल्हनों की माला पहननी पड़े. तो बच्चे बाप को उल्हनों की माला पहनाते, और बाप बच्चों को विजयी माला पहनाते हैं. बच्चे बाप से मदद लेने में तो होशियार हैं, लेकिन ज्ञान को धारण करने की पूरी हिम्मत रखने में नम्बरवार हैं.

बापदादा ने हम बच्चों को अब क्या करने के लिए कहा?

बापदादा ने कहा, बाबा से ज्ञान तो बहुत सुना हैं अब बाबा से मिलन मनाते रहना हैं. जैसे बापदादा सामने हैं तभी हम बच्चे बापदादा से मिलन मनाते, हमारे सम्पन्न स्टेज का अनुभव स्वतः ही करते हैं वैसे ही सदा बापदादा से कम्बाइन रहकर निरन्तर मिलन मनाओ. बापदादा चाहते हैं की हर बच्चा सदा बाप समान सम्पन्न स्वरूप में रहकर, अपने दर्शन मात्र से, अनेक तडफती हुई आत्माओं के दुख और अशान्ति दूर करें. बापदादा ने आगे कहा, ऐसे मास्टर रचता के स्टेज पर स्थित हो अपनी रचना के बेहद दुख और अशान्ति की समस्याओं को समाप्त करो. मास्टर दुख हर्ता सुख कर्ता का पार्ट बजाओ. सुख-शान्ति के खज़ाने से अपनी रचना को महादान और वरदान दो.

बापदादा ने कहा हम बच्चों में अब क्या नहीं होना चाहिए -

- अपनी कहानी ज्यादा वर्णन न करो - जैसे की मेरा भी कुछ करो वा मेरा भी कुछ सुनो, मेरे फैसले करने में समय दो.
- ईश्वरीय सेवा में कोई भी फैसिल्टीज न लो.
- कोई भी सेवा प्रति वा स्वयं प्रति सैलवेशन के आधार पर स्वयं की उन्नति वा सेवा की अल्पकाल की सफलता के पीछे मत भागों.
- कोई भी अल्पकाल की प्राप्ति की इच्छा मत रखो - जैसे की मेरा नाम हो जाए, मेरा काम हो जाए.
- नाम और मान के भिखारी-पन का अंश मात्र भी न हो.
- कर्म का फल खाने का अभ्यासी नहीं बनना हैं. कच्चा फल नहीं खाना हैं.
- इच्छा की विधा ही न हों - जैसे की यह होना ही चाहिए, मैंने किया, मुझे मिलना ही चाहिए - इसको इन्साफ़ नहीं समझना.
- मेरा कुछ इन्साफ़ (न्याय) होना चाहिए. भगवान के घर में भी इन्साफ़ नहीं हो तो कहाँ इन्साफ़ मिलेगा -- कभी ऐसे इन्साफ माँगने वाला नहीं बनना.
- किसी भी प्रकार से माँगने वाला नहीं बनना.

बापदादा ने अन्त में कहा, ऐसे सदा महादानी वरदानी, अल्पकाल की इच्छा मात्रम अविधा वाले, स्वयं के त्यागी सर्व के भाग्य बनाने वाले विधाता, सदा सम्पन्न और सन्तुष्ट रहने वाले, सर्व की समस्याओं का समाधान करने वाले - ऐसे बाप समान महान आत्माओं को बाप-दादा का याद प्यार और नमस्ते.

ऐसे बनाने वाले बापदादा को हम बच्चों का भी याद-प्यार और नमस्ते.

ॐ शांति.